नैया मेरी पार लगा दी
दिल में अपने मुझको जगह दी
बुझती मेरी ज्योति जगा दी
नैनों में नयी रोशनी जला दी
खिवैया ने मेरी डूबती नाव पार लगा दी

कब से भटक रही थी शांति को पाने
मिली न साधू संत तीर्थों में जा के
जप तप यज्ञ से भी हुई न कोई प्राप्ति
मिटी न तडपती आत्मा की प्यास जो थी प्यासी
मिला अब प्राण प्राणेश्वर दी जिसने आत्मो को जागृति

शांतिधाम का रास्ता बतलाया
शांति है अपना स्वधर्म सिखाया
क्यों खोज रहे तुम शांति
वो तो है तुम्हारी ही दासी
तुम क्यों उदास बने हो
मालिक हो उसके हुकुम करो बुलाओ

जीवन का मर्म यही है
स्मृति खोने से हुए कर्म भ्रष्ट है
अपनी ही जागीर को खोकर
एक दूजे से मांग कर रहे है

अपने स्वराज्य को खो गुलाम बने है

खुदा आया है खुद अपनी पहचान देने
बच्चे तुम थे देवता ,बने शैतान भूलें करके
सुख संपन्न थे , सतयुग के थे अधिकारी
कालचक्र ने बनाया दुखों का शिकारी
अंत हो रहा अति से इति फिर नई दुनिया की होगी

खुशियाँ मनाओ अपने स्वदेश अब जाना
पवित्र बन नयी दुनियां को फिर सजाना
वाह वाह के गीतों से भाग्य को बनाना
बीती को बीती समझ बिंदी लगाना
नयी सृष्टि की स्मृति में खुद को रिझाना

ॐ शांति!!